31

शैशवावस्था

(Infancy)

शैशवावस्था 2 वर्ष तक की अवस्था है। इस अवस्था के शिशु का विकास इतना अधिक नहीं होता है कि वह अपने क्रियाकलापों को स्वयं कर सके। इस अवस्था में, बालक माता-पिता पर पूर्णतः आश्रित होता है। 3 सप्ताह का शिशु सिर्फ 'रोने' का कार्य ही कर सकता है। बाहरी उद्दीपनों से वह बिल्कुल भी प्रभावित नहीं होता है। आयु बढ़ने के साथ-साथ उसका शारीरिक एवं मानसिक विकास होता है। धीरे-धीरे उसका माँसपेशियों पर नियन्त्रण बढ़ता जाता है। साथ ही साथ वह आत्मनिर्भर भी होने लगता है। परिणामस्वरूप वह स्वयं खाना खाने, खेलने, चलने आदि क्रियाएँ सीख जाता है।

प्रमुख संवेगों का विकास भी इसी अवस्था में होता है जैसे—भय, क्रोध, घृणा, प्रेम, हर्ष आदि। इस अवस्था का बालक 'स्वकेन्द्रित (Self Centered) होता है। वह अपनी प्रत्येक वस्तु पर केवल अपना अधिकार समझता है यहाँ तक कि वह अपने माता-पिता पर भी केवल अपना ही अधिकार मानता है। यदि उसके माता-पिता किसी दूसरे बालक को गोद में उठाकर प्यार करने लगते हैं, दुलारने-पुचकारने लगते हैं तो बालक रोने-चिल्लाने लगता है।

शैशवावस्था के विकासात्मक कार्य

(Developmental Tasks of Infancy)

जीवन के विकास क्रम में यह देखा गया है कि शून्य से प्रारंभ होने वाला जीव धीरे-धीरे विकास क्रम की विभिन्न अवस्थाओं को पार करता हुआ अंत में प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था को प्राप्त करता है जो कि प्राणी के जीवन की अंतिम अवस्था होती है।

यदि किसी शिशु के विकास क्रम का अध्ययन प्रारंभ से ही किया जाये तो ज्ञात होगा कि जैसे-जैसे प्राणी विकसित होता जाता है वैसे-वैसे वह नित नयी क्रियाओं और

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के नवीनतम् पाठ्यक्रमानुसार

पोषण के मूल तत्व एवं मानव विकास

(Fundamentals of Nutrition & Human Development)

- डॉ. अनीता सिंह
- डॉ. अंशु शुक्ला

स्टार पब्लिकेशन्स, आगर